

प्राचीन भारतीय दर्शन

वैदिक एवं औपनिषद् विद्वत्-सहित

- दर्शन शब्द संस्कृत के दृश धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - " जिसके द्वारा देखा जाये " अर्थात् 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' या जिसके द्वारा देखा जाय वह दर्शन है । या दर्शन वह अन्तर्चक्षु है जिसके माध्यम से तत्त्व के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है ।
- 'दृष्टं इति दर्शनम्' अर्थात् जिसने देखते हैं वह दर्शन है, है तात्पर्य तत्त्वदर्शन से है । तत्त्व वस्तु है अतः दर्शन का लक्ष्य वस्तुज्ञान या मोक्ष है ।
- राधाकृष्णन् के शब्दों में 'परम सत्ता' की साथ साक्षात्कार करने का ही इसका नाम दर्शन है ।
- इशावास्योपनिषद् में दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा गया है -
द्विरप्यमर्थेन पात्रेण सत्यस्यापिरितिं मुपयम् ।
तत्त्वं पूषन्नपात्रेण सत्यं धर्माद्य ह्यदृश्ये ॥ (मंत्र-15)
- अर्थात् -
सत्य का मुख स्वर्णमय पात्र से ढका हुआ है । झालि है पूषण ! देवता इसे अनावृत्तकर सत्य को प्रकाशित करें । अतः दर्शन सत्य को प्रकाशित करने का माध्यम है ।
- महर्षि गौतम के अनुसार -
युक्तिपूर्वक तत्त्वज्ञान प्राप्त करने का माध्यम दर्शन है ।
- आलोच्य मत में कहा जा सकता है - " हमारी सभी प्रकार की अनुभूतियों की युक्तिगत व्याख्या कर वास्तविकता का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना दार्शनिक चिन्तन का उद्देश्य है । " अनुभूतियाँ दो प्रकार की होती हैं -
- (1) ऐन्द्रिय (Sensory) - 5 ज्ञानेन्द्रिय
 - (2) अऐन्द्रिय (Non-Sensory) - मन
- 'सत्य' या वास्तविकता का ज्ञान अनेन्द्रिय अनुभूति से प्राप्त होता है अनेन्द्रिय / आध्यात्मिक अनुभूति
- आलोच्य मत में 'दर्शन' शब्द का अर्थ ही है साक्षात् देखना अर्थात् परम तत्त्व का साक्षात्कार या आपरोक्षानुभव ।

→ वाक्साकार के ये साधन हैं - श्रुति और तर्क ।

"आत्मा की जानी" (आत्मानं विहि) यह भारतीय दर्शन का उद्घोष है ।

→ त्रिविध ज्ञान (भार्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक) की निवृत्ति तथा भाव्य आनन्द की प्राप्ति भारतीय दर्शन का लक्ष्य है ।

→ ज्ञान, मनन, तथा निदिध्यासन इस लक्ष्य प्राप्ति के त्रिविध साधन हैं ।

* अंग्रेजी में दर्शन शब्द के लिए 'फिलॉसोफी' (PHILOSOPHY) शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

→ फिलॉसोफी ... दो ग्रीक शब्दों से बना है -

फिलॉस (PHILOS) - प्रेम (Love)

सोफिया (SOPHIA) - ज्ञान (WISDOM)

→ ज्ञान के प्रति प्रेम (Love for wisdom) फिलॉसोफी है ।

अथ

विद्या प्रेम / सत्त्वता / विद्या देवी / ज्ञान के प्रति अनुराग

→ पाश्चात्य मत में - दर्शन मनुष्य का एक निरपेक्ष बौद्धिक अध्ययन है जिसके दार्शनिक विषय की उसकी सम्पूर्णता में समझने की चैतन्य कला है ।

दर्शन की इस परिभाषा से इसके तीन प्रमुख विशेषता सामने आती हैं : —

1. निरपेक्षता

2. बौद्धिकता और

3. सम्पूर्णता

→ कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों ने दर्शन की अपनी शब्दों में व्याख्या की है : —

→ अकुरान - दर्शन अपने आपकी समझने का माध्यम है ।
(knowing through itself)

→ लैटरी - दर्शन है तत्त्व के मूल ज्ञान का अन्वेषण ही है ।

→ अरस्तू - दर्शन है पारमार्थिक तत्त्व के यथार्थ ज्ञान की खोज होती है ।

→ हीगेल - दर्शन वास्तविकता का तत्त्वज्ञान है ।

→ हर्बर्ट स्पेंसर - दर्शन का सम्बन्ध प्रत्येक वस्तु से है।

→ वर्ल्ड रसेल - दर्शन विज्ञानों के आधारों का तार्किक अध्ययन है।

→ काण्ट - दर्शन आलोचनात्मक परीक्षण है।

* पाश्चात्य छद्म में दर्शन बौद्धिक ज्ञान है जबकि आज़ीय दर्शन में दर्शन प्रत्यक्ष ज्ञान, आत्मज्ञान है।

→ सुक्रान्त - ज्ञान ही सत्यज्ञान है।

→ बैथम - अधिकतम संख्या का अधिकतम पुत्र अपेक्षित है।

→ मिल - सन्तुष्टि इच्छा को अपेक्षा सन्तुष्टि सुक्रान्त सत्य है।

→ होर्गेल - कुछ पानी के लिए कुछ ज़िन्दा पड़ता है।

→ ब्रैडली - अपना ज्ञान और जल्दी करने

→ काण्ट - सत्यज्ञान ही भ्रम है।

→ काण्ट - करने के लिए करने आवश्यक है।

* दर्शन के विभाग

दर्शन के मुख्य तीन विभाग हैं: —

1. तत्त्वमीमांसा (Metaphysics)

2. ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

3. नीतिमीमांसा (Ethics)

तत्त्वमीमांसा, दर्शन की वह शाखा जिसमें अन्तर्गत मूल तत्त्व क्या हैं? उनकी संख्या क्या है, एवं उनकी प्रकृति क्या है आदि विषयों की अध्ययन किया जाता है वह तत्त्वमीमांसा कहलाती है। इस क्षेत्र में चार उदाहरण बताते हैं: —

1. मूल तत्त्व जो एक है (Monism)

2. मूल तत्त्व आध्यात्मिक है या -चेतन है (Spiritual)

3. मूल तत्त्व जो एक तथा आध्यात्मिक दोनों है

4. मूल तत्त्व न जो एक है न आध्यात्मिक है, बल्कि दोनों में विभक्त है।

इन चारों मतों की क्रमशः —

जोड़वाद, अ (Monism)

प्रेयवाद (Idealism)

द्वैतवाद (Dualism)

अनुभववाद (Neorealism)

→ मूल-तत्त्व की संख्या की लेकर तीन मत हैं —

1. मूल तत्त्व एक है (एकवाद - Monism)

2. मूल तत्त्व दो हैं (द्वैतवाद Dualism)

3. मूल तत्त्व अनेक हैं (अनेकवाद Pluralism)

→

→ इस मत को माननेवालों में क्रमशः — रियलिज्म, डेकार्त एवं लाइबनिज का नाम आता है।

→ भारतीय दर्शन में क्रमशः शंकाचार्य, भंडारकर, सांख्य एवं जैन, विभिन्न मतों तथा मीमांसा दर्शन का नाम आता है।